मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 6.00
316
कानून का
शिकंजा
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
कदम

कानून का शिकंजा

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

राम-रहीम

■ लेखक-बिमल चटर्जी ■ चित्र-त्रिशूल कॉमिकोआर्ट

पिछले अंक 'मौत बेचने वाले' में आपने पढ़ा कि नकली दवा के सेवन से आए दिन कई जानें मौत का ग्रास बन रही थीं, जबकि पुलिस दवा बेचने वालों तथा उसे बनाने वालों को गिरफ्तार करने में पूरी तरह नाकामयाब थी। पुलिस विभाग की नाकामयाबी को देखते हुए गृहमंत्री ने यह केस सीक्रेट सर्विस को सौंप दिया। चीफ मुखर्जी ने राम-रहीम को अपने ऑफिस में बुलाया और उन्हें सारी बातों से अवगत कराया। तब राम-रहीम ने मौत बेचने वालों को पकड़ने का बीड़ा उठाया, परन्तु अपराधी बहुत चालाक थे। उनका कोई भी आदमी राम-रहीम अथवा पुलिस के हाथ लगता तो वे उसे खत्म कर देते। तब ज्ञातव्य सूत्रों द्वारा रामनगर में नकली दवाओं से मौत का ग्रास बनने वालों की अधिकता को जानकर राम-रहीम रामनगर की ओर रवाना हुए। जब मुख्य अपराधी ब्लैकमैन को इस बात का पता चला तो उसने अपने एक आदमी द्वारा उनके कम्पार्टमेंट में टाइमबम रखवा दिया, मगर संयोग से एक चोर द्वारा उसी कम्पार्टमेंट में बैठी एक महिला का पर्स छीनकर भागने के कारण राम-रहीम को अपनी सीट छोड़नी पड़ी और वे चोर को पकड़ने के लिए कम्पार्टमेंट से उतर गये, लेकिन चोर को पकड़कर जैसे ही उन्होंने पुलिस के हवाले किया, गाड़ी चलनी शुरू हो गयी। राम-रहीम चलती ट्रेन की ओर दौड़े, लेकिन ...

या खुदा!
हे ईश्वर! यह क्या हुआ?
ओह... नो...!

फ्लेटफार्म से दूर एक कोने में खड़ा पेड्रो और उसका साथी भी इस दृश्य को देख रहे थे।
हा... हा... हा... दुश्मन गये काम से।
हां, अब उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं। आओ, बाहर चलकर ट्रांसमीटर पर बॉस को यह खुशखबरी दे दें।

राम भइया, हमें भी अन्य लोगों के साथ सहायता कार्य में हाथ बंटाना चाहिये।
चाहता तो मैं भी यही हूं रहीम, लेकिन फिलहाल वहां जाना हमारे लिये उचित नहीं होगा। आओ, स्टेशन से बाहर चलते हैं।

क्या मतलब? मुसीबत में फंसे लोग मदद के लिये चीख-पुकार रहे हैं और तुम...
मुझे गलत मत समझो रहीम, ऐसा मैं कुछ सोचकर ही कह रहा हूं— आओ! पहले यहां से बाहर चलें, फिर सब कुछ बताऊंगा।
रहीम ने फिर कोई प्रश्न नहीं किया और चुपचाप राम के साथ बाहर की ओर चल पड़ा।

स्टेशन से बाहर निकलने के पश्चात—
हां, अब बताओ क्या बात है?
क्या तुमने इस बात पर ध्यान दिया कि विस्फोट किस कम्पार्टमेंट में हुआ था?

हां, संयोग से वह विस्फोट उसी कम्पार्टमेंट में हुआ, जिसमें हम सवार थे।
यह मात्र संयोग ही नहीं था रहीम, बल्कि एक सोची-समझी स्कीम थी...

...जरूर अपराधी को हमारे रामनगर जाने के बारे में पता चल गया होगा, इसीलिए उसने हमें पूरे कम्पार्टमेंट सहित टाइमबम से उड़ा देना चाहा था...

...अब इसे संयोग ही समझो कि हम उस चोर की वजह से बच गए।
हां।
उफ! यानी उस शैतान ने सिर्फ हम दो जानों के लिए इतने इंसानों की जानें ले लीं।

राम भइया, कहीं इस काण्ड के पीछे उसी व्यक्ति का हाथ तो नहीं, जो हमारे कम्पार्टमेंट में पहले से ही बैठा अखबार पढ़ रहा था और इसी स्टेशन पर उतरा था।
मुझे भी उसी पर सन्देह है, लेकिन अब भला वह वहां कहां होगा? काश! मुझे उस शैतान के इरादे की जरा भी भनक लग गई होती तो मैं उसकी गर्दन तोड़कर रख देता।

खैर, अब तुम्हारा क्या प्रोग्राम है? रामनगर के लिये तो अब जल्दी ही कोई ट्रेन मिलने की उम्मीद है नहीं।
मैं ट्रेन द्वारा अब जाना भी नहीं चाहता। पहले ट्रांसमीटर द्वारा चीफ को इस घटना की रिपोर्ट दे दूं, उसके बाद रामनगर के लिये कोई टैक्सी देखेंगे।
ठीक है।

फिर दोनों पास ही खड़े पेड़ों के झुरमुटों के बीच पहुंच गये। राम ने अपनी कलाई घड़ी की चाबी को एरियल की तरह बाहर खींचा और ट्रांसमीटर को ऑन करने के बाद चीफ मुखर्जी से सम्बन्ध जोड़ने लगा।
हैलो-हैलो—राम कालिंग—हैलो-हैलो—मि० मुखर्जी—राम कालिंग हैलो—।

शीघ्र ही चीफ से सम्पर्क स्थापित हुआ।
यस राम! योर चीफ इज हेयर—रिपोर्ट!
उत्तर में राम जल्दी-जल्दी चीफ को ट्रेन-हादसे की सारी बात बताने लगा।

सारी बात बताने और सलाह-मशवरा करने के पश्चात् राम ने घड़ी को पूर्ववत् किया और रहीम की ओर देखता हुआ बोला —
चलो, अब निकट के टैक्सी स्टैण्ड से कोई टैक्सी पकड़ते हैं।
ठीक है, चलो।
शीघ्र ही वे दोनों एक टैक्सी पर सवार हो रामनगर को उड़े चले जा रहे थे।
राम भइया, एक प्रकार से यह सबकुछ हमारे पक्ष में अच्छा ही हुआ। अपराधी अपनी नजर में हमें ठिकाने लगाकर संतुष्ट हो चुके होंगे।
ठीक कहते हो। अब हम निश्चिंत होकर उनकी तलाश कर सकते हैं।
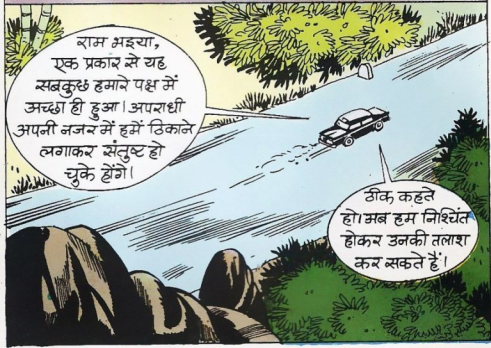
इधर एक कार पर सवार पेड्रो ट्रांसमीटर पर अपने बॉस को रिपोर्ट दे रहा था।
बॉस, उन दोनों छोकरों का किस्सा मैंने हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर दिया है। अफसोस है कि उनके साथ-साथ कुछ और लोगों की जानें भी चली गईं।
तुम मूर्ख हो पेड्रो...

...वे दोनों न केवल जिन्दा हैं, बल्कि इस समय एक टैक्सी द्वारा रामनगर के लिए रवाना भी हो चुके हैं।

क... क्या ? यह आप क्या कह रहे हैं बॉस ? यह... यह कैसे सम्भव हो सकता है ?
यह सम्भव हो चुका है पेड्रो, एक चोर के कारण उनकी जानें बच गईं।

सुनो पेड्रो, वे दोनों किसी भी हालत में जिन्दा रामनगर नहीं पहुंचने चाहिये, वरना...।
म... मैं समझ गया बॉस। आप निश्चिंत रहें। इस बार वे हरगिज नहीं बच पायेंगे।

पेड्रो ने ट्रांसमीटर ऑफ किया।
गजब हो गया दिलावर! वे दोनों शैतान छोकरे बच निकले और इस समय एक टैक्सी द्वारा रामनगर ही जा रहे हैं।
मैं सुन चुका हूं दोस्त, अब उन्हें रामनगर में प्रविष्ट होने से रोकने के लिये केवल एक ही उपाय है कि रामनगर में मौजूद अपने आदमियों को तुरन्त सतर्क कर दिया जाए।

ठीक कहते हो। मैं अभी उन्हें अलर्ट करता हूं। यदि वे छोकरे रामनगर पहुंच गये तो हमारी खैर नहीं।
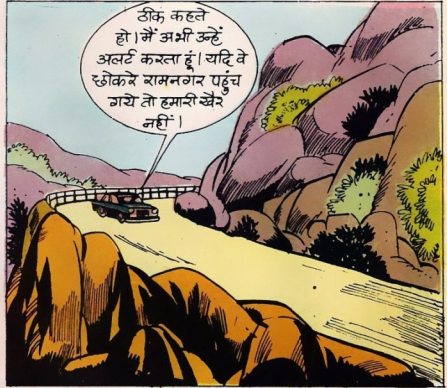
अगले ही पल पेड्रो ने पुन: ट्रांसमीटर ऑन किया और किसी से संपर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगा।
हैलो-हैलो — जाबिर — पेड्रो कालिंग — हैलो!

उधर लगभग छ: घण्टे के सफर के पश्चात् राम-रहीम की टैक्सी एक पहाड़ी मार्ग पर पहुंची।
वाह! कितना सुन्दर नजारा है।
नजारों को मारो गोली भइया, पहले खाने की सोचो। मेरे पेट में तो इस समय चूहे पूरे जोर-शोर से कीर्तन कर रहे हैं। सुबह से कुछ नहीं खाया।

साहब, यहां से लगभग तीस किलोमीटर दूर सुन्दर वन की सीमा है। वहां आपको खाने और रहने के लिये होटल मिल जायेंगे।
हमें सिर्फ भोजन करना है, ठहरना नहीं है। हम चाहते हैं कि किसी तरह सुबह तक रामनगर अवश्य पहुंच जाएं।

माफ कीजिएगा साहब, शाम ढल चुकी है और सुन्दर वन तक पहुंचते-पहुंचते रात हो जायेगी। उसके बाद इन दुर्गम पहाड़ी मार्ग पर सफर करना मौत को दावत देने जैसा ही होगा। मैं यह खतरा नहीं उठा सकता। यदि आप आज की रात वहां न गुजारना चाहें तो कोई और टैक्सी देख लीजिएगा।
ओह!
फिर टैक्सी में पूरी तरह खामोशी छा गई।

और रात के लगभग आठ बजे जब टैक्सी सुन्दर वन पहुंची तो बहुत से होटलों के एजेण्टों ने उन्हें घेर लिया।
साहब, होटल।
साहब, हमारे होटल में आपको हर प्रकार की सुविधा मिलेगी।

कुछ खतरनाक शक्ल-सूरत के व्यक्तियों को जैसे राम-रहीम के ही वहां पहुंचने का इंतजार था।
सुनो, वे दोनों आ पहुंचे हैं। तुम लोगों को क्या करना है, यह मैं तुम्हें पहले ही समझा चुका हूं।
तुम चिन्ता मत करो उस्ताद! उन दोनों की लाशें कल सुबह लोगों को किसी खाई में ही पड़ी मिलेंगी।
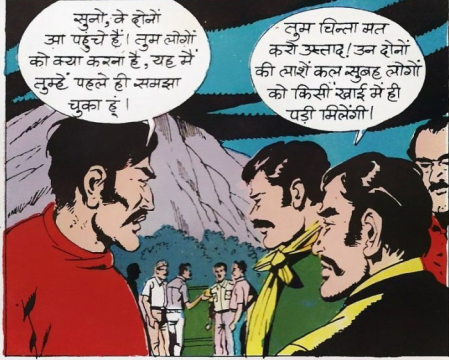
उधर राम-रहीम एक एजेण्ट के साथ अच्छे से होटल में पहुंचे।
देखिये साहब, यह है आपका कमरा। इस जैसा कमरा आपको इस इलाके के किसी भी होटल में नहीं मिलेगा, और फिर किराया भी केवल पचास रुपये है।
ठीक है, हमें पसंद है।

यह लो पचास रुपये एडवांस।
धन्यवाद साहब, आपका कोई सामान हो तो मैं टैक्सी से ले आऊं!

कोई सामान नहीं, बस तुम हमारे लिये किसी वेटर के हाथ गर्मागर्म खाना भिजवा दो।
बहुत अच्छा साहब!

कुछ ही देर में भोजन आ गया।
रहीम, क्यों न भोजन करने के बाद कुछ देर घूमने के लिए बाहर चलें।
नहीं भइया, मैं तो बहुत थक गया हूं। मेरा प्रोग्राम तो सिर्फ चादर तानकर सोने का है।
चलो, ऐसा ही सही।

चूंकि दोनों ही लम्बे सफर से थके हुए थे, इसलिये भोजन से निवृत्त होने के पश्चात् जैसे ही वे अपने-अपने बिस्तर पर लेटे, उन्हें गहरी नींद ने दबोच लिया।
दोनों गहरी नींद में हैं। चलो, भीतर पहुंचो और उनका काम तमाम कर दो।
ओ. के.

सब एक-एक कर खिड़की के रास्ते भीतर पहुंचे...

और अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों को मजबूती से थामे दबे कदमों से दो ग्रुपों में बंटकर राम-रहीम की ओर बढ़े।

परन्तु तभी कमरे में फैले अंधकार के कारण एक बदमाश का पैर किसी वस्तु से टकराया और...
कौन?
खटाक

खतरे की गंध पाते ही—
रहीम, बचो।
ओह!

दोनों फुर्ती से उछलकर बिस्तर से नीचे आ गए।
देख क्या रहे हो? खत्म कर दो दोनों कुत्तों को।

परन्तु एक बार सचेत हो जाने के पश्चात् राम-रहीम को खत्म कर देना क्या इतना आसान काम था? इससे पहले कि उनमें से कोई एक कदम भी आगे बढ़ा पाता, दोनों उनपर प्रलय बनकर टूट पड़े।
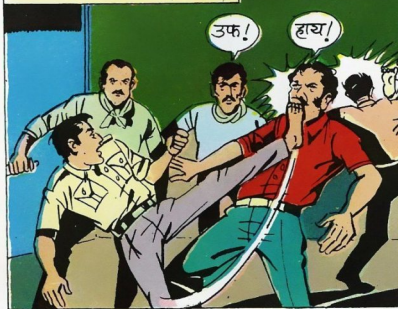
राम-रहीम द्वारा एकाएक किये गये आक्रमण से पहले तो वे बदमाश पिटे, लेकिन फिर शीघ्र ही वे सम्भल गए।

क्रोधित हो बदमाशों ने एक साथ उनपर आक्रमण किया, लेकिन अगले ही पल उनके कंठ से फिर चीख निकल गई।

उसके बाद तो उन्होंने उन बदमाशों को सम्भलने अथवा वार करने का कोई मौका ही नहीं दिया।

शीघ्र ही वे बदमाश बुरी तरह बदहवास हो उठे और —

पलक झपकते ही उन सभी ने खिड़की फांदी और मेन गेट की ओर दौड़े, किन्तु अब भला राम-रहीम इतनी आसानी से उनका पीछा कहां छोड़ने वाले थे।

शीघ्र ही वे बदमाश गेट के बाहर खड़ी एक कार के निकट पहुंचे।
बैठो, जल्दी करो।

जाबिर समेत चार बदमाश तो कार में सवार हो गये, परन्तु पांचवां रहीम के शिकंजे से नहीं बच सका।
बेटा, कम-से-कम तुम्हें तो हाथ से नहीं निकलने दूंगा।
कड़ाक
आह।

और —
बताओ, कौन हो तुम और हमें समाप्त करने के लिये तुम्हें किसने भेजा है?
उफ! ठ... ठहरो बताता हूं!
कड़ाक

परन्तु इससे पहले कि वह कुछ बता पाता —
धांय-धांय
आ...ई...ई
???
अरे!

बिना एक पल भी नष्ट किये राम कुलांचें भरता हुआ गेट से बाहर निकला, परन्तु —
ओफ! कम्बख्त निकल गये! पीछा करने का भी कोई साधन नहीं!

हताश हो राम वापस लौटा।
सुनो, मरने से पहले यदि कुछ कहना चाहते हो तो कह डालो। इससे तुम्हारी आत्मा को शांति मिलेगी।
म... माल... र ...र...रो...। न...को...।

परन्तु पूरी बात कहने से पहले ही उसकी गर्दन एक तरफ दुलक गई।
ओह! दम तोड़ दिया। रहीम, तुम पुलिस स्टेशन फोन करो।
ठीक है।

सूचना मिलते ही पुलिस वहां पहुंची।
अरे! यह तो सूरजकुंड का मशहूर गुण्डा कालू है।

इसे किसने मारा है?
इसी के साथियों ने इंस्पेक्टर!
फिर राम ने इंस्पेक्टर को सारी बात बता दी।

और तुम्हारा परिचय!
मुझे राम और इसे रहीम कहते हैं।

राम-रहीम का परिचय पाकर इंस्पेक्टर आश्चर्य से उछल पड़ा।
ओह! तो आप हैं राम-रहीम! काफी नाम सुना था, आज भेंट भी हो गई। अच्छा, क्या आप बतायेंगे कि वे बदमाश आप दोनों को क्यों मारना चाहते थे?
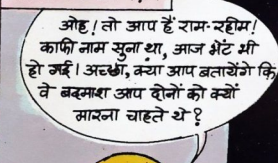
इस सम्बन्ध में हम क्या बता सकते हैं इंस्पेक्टर साहब! हम दोनों तो यहां घूमने के उद्देश्य से आये थे।
हुम्म! खैर, आप अपने कमरे में जाकर आराम कीजिये। मैं इसके साथियों को जल्द-से जल्द गिरफ्तार करने की कोशिश करूंगा।
राम ने जान-बूझकर असलियत नहीं बताई थी।

राम-रहीम के जाने के बाद—
चेतसिंह, तुम फोन करके फोटोग्राफर और एम्बुलेंस बुला लो। तब तक मैं अन्य लोगों के बयान लेता हूं।
ओ.के. सर!

इधर राम-रहीम अपने कमरे में पहुंचे—
राम भइया, आखिर अपराधियों को हमारे यहां होने के बारे में पता कैसे चल गया, जबकि उनकी निगाहों में तो हम ट्रेन हादसे में मारे जा चुके हैं।
यही बात तो मेरी भी समझ में नहीं आ रही। खैर, तुम आराम करो, मैं चीफ से कान्टेक्ट करता हूं।

उधर सुन्दर वन से दूर मालरोड पर बने एक मकान में—
मूर्खो, तुमने सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया। उन दोनों लड़कों को मारना तो दूर, तुम स्वयं अपने ही एक आदमी को खो बैठे।
मजबूरी थी मि० पेड्रो! यदि हम उसे खत्म नहीं करते तो वे दोनों लड़के उससे हम सबके विषय में उगलवा लेते।

बको मत, तुम लोगों ने हमारे लिये खतरा और बढ़ा दिया है। यदि वे दोनों छोकरे रामनगर पहुंचने में सफल हो गये तो बॉस हमें जिन्दा ही धरती में गड़वा देगा।
वे दोनों किसी भी हालत में रामनगर नहीं पहुंच पायेंगे मि० पेड्रो। आप निश्चिंत रहें।

लेकिन तभी पेड्रो और दिलावर ने फुर्ती के साथ अपनी-अपनी जेबों से रिवाल्वर निकालकर उन बदमाशों पर तान दिये और पेड्रो गुर्राया—
नहीं, अब हम तुम लोगों पर भरोसा करके निश्चिंत बैठने की मूर्खता नहीं कर सकते।
क...क्या मतलब?

मतलब यह कि तुम्हारे उस साथी की शिनाख्त होते ही पुलिस को तुम लोगों तक पहुंचते देर नहीं लगेगी, फिर तुम्हारे द्वारा हम तक। अतः तुम लोगों का मर जाना ही अब हमारे हक में अच्छा रहेगा।

पेड्रो की बात सुनकर जाबिर क्रोध से दहाड़ उठा—
कमीने, धोखेबाज, अब तुम हमारे हाथों नहीं बचोगे!
जग्गू, करीम, टुकड़े-टुकड़े कर दो इन दोनों कुत्तों के।

परन्तु इससे पहले कि उनमें से कोई भी आगे बढ़ पाता—
धांय...धांय...
उफ!
आह!

पलक झपकने के साथ ही जाबिर समेत उन सभी बदमाशों की लाशें खून से लथ-पथ फर्श पर पड़ी दिखाई दे रही थीं।
आओ दिलावर, निकल चलें। सुबह होने से पहले-पहले अब हमें ही उन लड़कों का कुछ प्रबन्ध करना है।
ठीक है, चलो!

शीघ्र ही दोनों उस मकान से निकलकर बाहर खड़ी कार में सवार हुए और कार तीव्र गति से एक तरफ दौड़ पड़ी।
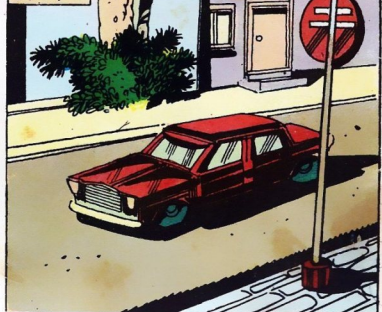
उधर राम-रहीम ने भोर होते ही होटल छोड़ दिया और टैक्सी पर सवार हो पुनः रामनगर के लिए रवाना हो गये।
ड्राइवर, हम कब तक रामनगर पहुंच जायेंगे?
यदि रास्ता साफ मिला तो तीन घण्टे से अधिक समय नहीं लगेगा।

परन्तु अभी उन्हें सफ़र करते हुए आधा घण्टा ही बीता होगा कि—
अरे बाप रे, वह ट्रक तो पूरी सड़क को घेरे हुए आंधी-तूफान के समान बिल्कुल हमारी ही सीध में चला आ रहा है।
???
ओह! इसके इरादे कुछ ठीक नहीं मालूम पड़ते।

ड्राइवर, गाड़ी को साइड में करो, वरना वह एक्सीडेंट कर देगा।
साइड में कहां से करूं साहब, बराबर में खाई है और ट्रक पूरा रास्ता घेरे हुए है। बचाव का कोई मार्ग नहीं।

लगता है, ट्रक ड्राइवर बुरी तरह पीये हुए है। गाड़ी को रोककर बैक करो, वरना खैर नहीं।
ठीक है, ऐसा ही करता हूं।

परन्तु जैसे ही ड्राइवर ने गाड़ी को रोककर बैक करनी चाही—
उफ! पीछे भी ट्रक है और वह भी पूरा रास्ता रोककर चला आ रहा है।
ओ माई गॉड, यह तो जान-बूझकर एक्सीडेंट करने के चक्कर में मालूम पड़ते हैं।

रहीम, लगता है वे हमें ही खत्म करने के चक्कर में हैं। जल्दी से बाहर निकलो।
ठीक है।

परन्तु इससे पहले कि राम-रहीम टैक्सी से बाहर निकल पाते—
धड़ाक्
उफ!
आह!

टैक्सी चालक ने गाड़ी को कन्ट्रोल करने की काफी कोशिश की, परन्तु तभी सामने से आते ट्रक ने भी आकर उसे टक्कर मारी।
उफ! अब गाड़ी को नहीं सम्भाला जा सकता। तुम दोनों कूद जाओ।

और टैक्सी के खाई में उलटने के साथ ही राम-रहीम ने बाहर छलांग लगा दी।

लेकिन वे किनारे पर गिरने की बजाए सैकड़ों फुट गहरी खाई में लुढ़कते चले गये।
उफ!
हे प्रभु!

परन्तु तभी संयोग से राम-रहीम के हाथों में खाई की दीवार से निकली हुई घनी बेल आ गई।
आहा! अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है!
थैंक्स गॉड!

परन्तु बेचारा टैक्सी ड्राइवर टैक्सी से कूद पाने में सफल नहीं हो पाया और—
धड़ाम
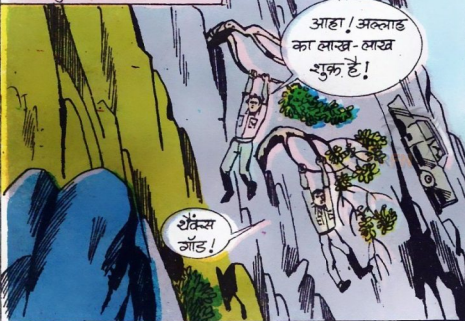
रहीम, दीवार से चिपक जाओ और अपने आपको पत्तियों से ढक लो। हो सकता है वे झांककर हमें देखने की कोशिश करें।
समझ गया!
और दोनों ने दीवार से चिपककर अपने आपको बेल की पत्तियों के बीच छिपा लिया।

उधर पेड्रो, दिलावर और उसके कुछ साथी ट्रकों से उतरकर खाई के किनारे पहुंचे।
हा...हा...हा... किस्सा खत्म हुआ उन दोनों का। अब मुद्दत तक उनकी लाशों का भी किसी को पता नहीं चलेगा। आओ लौट चलें।

उसके बाद वे ट्रकों पर सवार होकर वापस लौट गये।

उनके जाने के कुछ देर बाद —
वे लोग चले गये। अब इन बेलों को छोड़कर जगह-जगह निकली चट्टानों को पकड़-पकड़ कर ऊपर पहुंचने की कोशिश करो, लेकिन सावधान, यदि नीचे गिरे तो हड्डियों का भी पता नहीं चलेगा।
क्यों डरा रहे हो भइया। मेरी हड्डियां तो अभी से कांपने लगी हैं।

फिर दोनों सम्भल-सम्भलकर ऊपर चढ़ने लगे।

शीघ्र ही वे सकुशल ऊपर पहुंच गये।
उफ। बाल-बाल बचे, वरना उन कम्बख्तों ने तो आज हमें मार ही दिया होता।
हम तो बच गये, लेकिन मुझे उस ड्राइवर की मौत का दुःख है। हमारे चक्कर में बेकार ही उस बेचारे की जान गई।

अब क्या प्रोग्राम है भइया। रामनगर तो अभी यहां से काफी दूर है।
फिर वे दोनों किसी वाहन के आने का इन्तजार करने लगे।

कुछ देर बाद ही उन्हें दूर से एक कार अपनी ओर आती दिखाई दी।
सुनो रहीम, यदि कारचालक हमें रामनगर ले चलने में कोई आनाकानी करे तो उसे फार्मूला नम्बर दो से तैयार करना है।
मैं भी यही सोच रहा हूं।

जब वह कार कुछ निकट पहुंची—
हैल्प प्लीज!

ड्राइवर ने तुरन्त गाड़ी रोक दी।
सुनिये, हमें एक टैक्सी चालक धोखा देकर यहां छोड़ गया है। क्या आप हमें रामनगर तक छोड़ने की कृपा करेंगे।
हां-हां, क्यों नहीं! पीछे बैठ जाओ।

और बिना किसी आनाकानी के कार का मालिक उन्हें लेकर रामनगर की ओर चल पड़ा।

लगभग डेढ़-दो घण्टे पश्चात् वे रामनगर में थे।
आपका बहुत-बहुत धन्यवाद अंकल, जो आपने हमें यहां तक लिफ्ट दी।
इट्स आल राइट माई ब्वाय! कोई और बात हो तो कहो।
नो, थैंक्स अंकल!
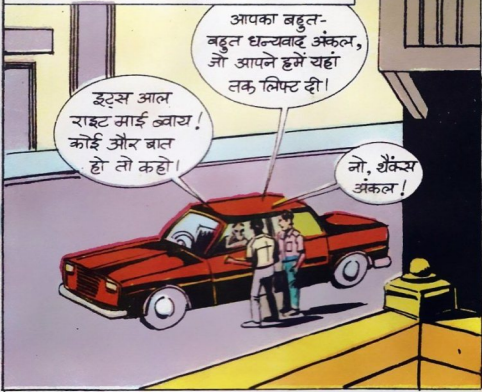
अगले दिन सुबह दस बजे चीफ मुखर्जी जैसे ही तैयार होकर ऑफिस जाने के लिये अपनी कार की ओर बढ़े —
ओह! शायद राम-रहीम का संदेश है!
पिक-पिक

चीफ मुखर्जी ने तुरन्त अपनी कलाई घड़ी को ट्रांसमीटर का रूप दिया।
हैलो-हैलो, चीफ आफ डबल सीक्रेट सर्विस!
गुड मार्निंग चीफ! मैं राम बोल रहा हूं।

ओह! राम!
हैलो राम, तुम दोनों ठीक तो हो ना! कहां से बोल रहे हो?

मैं इस समय रामनगर के ही एक होटल से बोल रहा हूं चीफ! आज सुबह फिर हमें मारने की कोशिश की गई, लेकिन हम बाल-बाल बच गये।
और राम ने चीफ मुखर्जी को सुबह की सारी घटना कह सुनाई।

सारी बात सुनकर चीफ मुखर्जी का चेहरा अत्यंत गम्भीर हो उठा।
सुनो राम, यह केस अब बहुत खतरनाक होता जा रहा है। ऐसा लगता है, अपराधी तुम्हें खत्म किये बिना नहीं मानेंगे। अत: तुम दोनों वापस लौट आओ। मैं यह केस सीनियर सीक्रेट सर्विस के हवाले कर देता हूं।

नो चीफ, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। अपराधी के इतने निकट पहुंचकर हम इस केस से अपना हाथ नहीं खींच सकते।
लेकिन बेटे!

आप हमारी जरा भी चिन्ता न करें चीफ! हमने ऐसी योजना बनाई है कि अपराधी जो कोई भी है, जल्द ही कानून के शिकंजे में होगा।

उफ! लगता है अब ये छोकरे किसी भी तरह मानने वाले नहीं, लेकिन इन्हें आगे कदम बढ़ाने से रोकना बहुत ही जरूरी है, वरना...
आप चुप क्यों हो गये अंकल!

ठीक है, तुम नहीं मानते तो जैसा उचित समझो वैसा करो, परन्तु मैं चाहता हूं कि आगे कोई भी कदम उठाने से पहले तुम दोनों मुझसे एक बार मिल लो।
लेकिन आप इतनी जल्दी रामनगर पहुंचेंगे कैसे?

मैं अपने विभाग के विशेष प्लेन द्वारा कुछ ही घण्टों में रामनगर पहुंच जाऊंगा। तुम यह बताओ कि ठहरे किस होटल में हो?

होटल मून नाइट में!
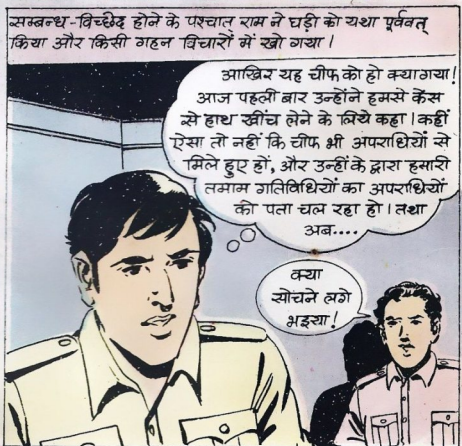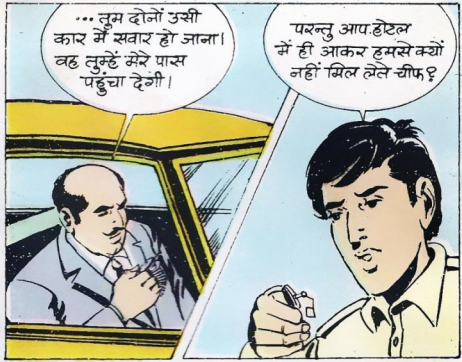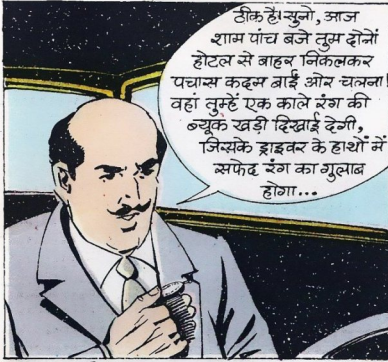
ठीक है। सुनो, आज शाम पांच बजे तुम दोनों होटल से बाहर निकलकर पचास कदम बाईं ओर चलना! वहां तुम्हें एक काले रंग की ब्यूक खड़ी दिखाई देगी, जिसके ड्राइवर के हाथों में सफेद रंग का गुलाब होगा...

...तुम दोनों उसी कार में सवार हो जाना। वह तुम्हें मेरे पास पहुंचा देगी।
परन्तु आप होटल में ही आकर हमसे क्यों नहीं मिल लेते चीफ?

मुझे सन्देह है कि अपराधी मुझ पर भी नजर रखे हुए है। अतः मैं ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहता, जिससे कि अपराधी...

...मेरा पीछा करते हुए तुम तक पहुंच जाये और तुम लोगों के प्राण फिर खतरे में पड़ जायें।
ओह! ठीक है चीफ, जैसा आपने कहा हम वैसा ही करेंगे।

गुड! बाकी बातें मिलने पर होंगी। ओवर एण्ड आल।
ओ. के. चीफ! ओवर एण्ड आल!

सम्बन्ध-विच्छेद होने के पश्चात राम ने घड़ी को यथा पूर्ववत् किया और किसी गहन बिचारों में खो गया।
आखिर यह चीफ को हो क्या गया! आज पहली बार उन्होंने हमसे केस से हाथ खींच लेने के लिये कहा। कहीं ऐसा तो नहीं कि चीफ भी अपराधियों से मिले हुए हों, और उन्हीं के द्वारा हमारी तमाम गतिविधियों का अपराधियों को पता चल रहा हो। तथा अब....
क्या सोचने लगे भइया!

इधर रामनगर की ही एक इमारत में पेड्रो, दिलावर और उसके साथी राम-रहीम की मौत पर जश्न मना रहे थे।

हिच! खूब पीयो यारो, आज बॉस उन दोनों छोकरों की मौत का हमें इनाम देने आ रहे हैं। एक भयानक खतरे को हमने अपने मार्ग से हटा दिया।

हा...हा... हा...हिच...अब कुछ दिन आराम से बीतेंगे--हिच...!

हा...हा...हा... और पिलाओ!

परन्तु पेड्रो और उसके साथी इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनका बॉस उस इमारत में प्रवेश कर चुका है।

10

खट् खट् खट्

फिर बॉस धीरे-धीरे उन्हें कुछ समझाने लगा।

अपनी योजना समझाने के बाद वह पुनः बोला—

सबके बाहर जाने के बाद बॉस भी उस कमरे से निकलकर एक ओर बढ़ चला।

उधर चीफ से कान्टेक्ट करने के बाद राम-रहीम तैयार होकर होटल से बाहर निकले।
टैक्सी!
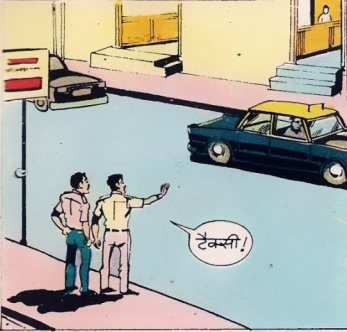
टैक्सी के रुकते ही राम-रहीम पिछली सीट पर पहुंच गये।
पुलिस मुख्यालय चलो।
Rose
बहुत अच्छा साहब!
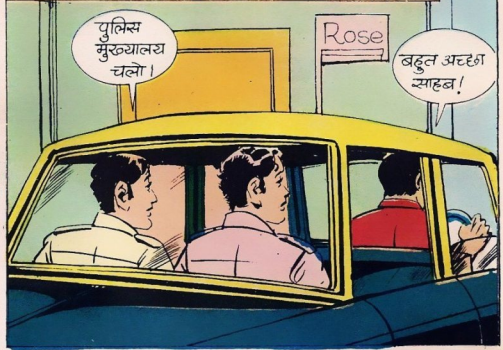
कुछ ही देर बाद उनकी टैक्सी पुलिस मुख्यालय के बाहर खड़ी थी।
पुलिस मुख्यालय
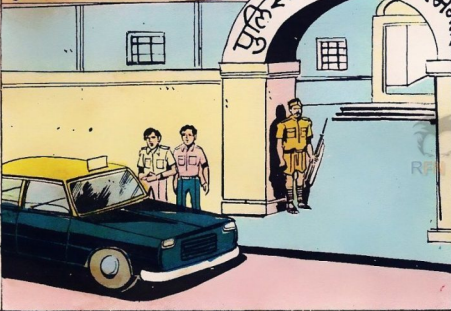
अर्दली द्वारा कार्ड भीतर भेजते ही पुलिस कमिश्नर मि॰ जैड ने उन्हें तुरन्त भीतर बुलवा लिया, क्योंकि वे पहले से ही उनसे परिचित थे।
बैठो बेटे, मुझे तुम दोनों के अकस्मात् आगमन पर काफी हैरानी हो रही है!

अंकल, हम आपके पास 'मौत बेचने वाले' मेरा मतलब है जाली नोट छापने वाले और नकली दवाइयां बेचने वाले गैंग के सिलसिले में कुछ विशेष बातें करने आये हैं।
ओह! अवश्य! कहो, क्या कहना चाहते हो?

सुनिये, यदि आप मेरी योजना पर अमल करें तो मुझे विश्वास है कि वह गैंग आज रात ही कानून की पकड़ में आ जायेगा।
यदि ऐसी बात है तो जल्दी से बताओ कि मुझे क्या करना होगा? यह गैंग तो हमारे लिये काफी समय से सरदर्द बना हुआ है, जनता में अलग आतंक व्याप्त है।

फिर राम धीमे-धीमे पुलिस कमिश्नर को कुछ समझाने लगा, जिसे सुनकर पुलिस कमिश्नर के साथ-साथ रहीम की भी आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं।

उसके बाद राम-रहीम एक टैक्सी लेकर वापस होटल पहुंच गये। दोपहर हो चुकी थी, अत: दोनों खा-पीकर आराम करने के लिये बिस्तर पर जा लेटे।

उफ! इस गैंग के साथ चीफ अंकल का भी सम्बन्ध हो सकता है, यह तो सपने में भी सोचा नहीं जा सकता था। राम का सोचना स्वाभाविक भी है। सिवाय चीफ के और कोई नहीं जानता था कि हम जीवित हैं अथवा नहीं, जबकि अपराधी बार-बार हम पर आक्रमण करता रहा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि चीफ से ही अपराधी को सूचना मिलती रही होगी।

काफी देर बाद कार एक विशाल इमारत के कम्पाउंड में दाखिल हुई।
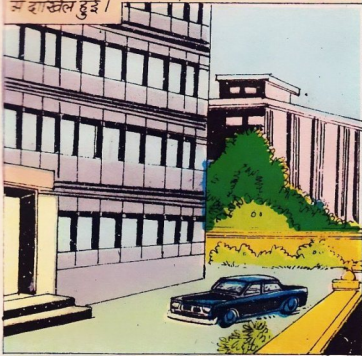
कार के रुकते ही राम-रहीम नीचे उतर पड़े। वहां पहले से ही एक व्यक्ति खड़ा था।
दिलावर, तुम यहीं रुको। मैं इन्हें लेकर चीफ के पास जाता हूं।
ओ.के. जोनी!

वह लम्बा-चौड़ा व्यक्ति, जिसका नाम जोनी था, राम-रहीम को लेकर इमारत के भीतर की ओर चल पड़ा।
तुमने यहां आने के बारे में किसी को कुछ बताया तो नहीं?
नहीं, क्योंकि चीफ को यह कदापि अच्छा नहीं लगता।
कहते समय राम के अधरों पर एक रहस्यमय मुस्कान उभर आयी।

और फिर जैसे ही जोनी उन्हें लेकर इमारत के भीतर प्रविष्ट हुआ, कुछ सशस्त्र व्यक्तियों ने राम-रहीम को अपने घेरे में ले लिया।
इस हरकत का मतलब?
हा...हा...हा... घबराओ नहीं, ऐसा चीफ के आदेश पर ही किया जा रहा है!

चलो, ले चलो इन्हें बॉस के पास। कम्बख्तों ने नाक में दम कर रखा था।
राम-रहीम ने कोई आना कानी करनी व्यर्थ ही समझी...

...और वे सशस्त्र व्यक्ति उन्हें लेकर इमारत के भीतर ही एक तरफ चल पड़े।
हुम्म! तो मेरा संदेह आखिरकार ठीक ही निकला! इस सारे षड्यंत्र के पीछे चीफ का ही हाथ है!
आखिर फंस ही गये अपराधियों के चंगुल में! अब साफ हो गया कि या तो चीफ ही इस खतरनाक दल के मुखिया हैं या फिर अपराधियों के साथ मिले हुए हैं!

शीघ्र ही वे सशस्त्र व्यक्ति उन्हें लेकर एक लम्बे-चौड़े हाल में पहुंचे, जहां उनका रहस्यमय बॉस एक रिवाल्विंग चेयर पर पीठ घुमाए बैठा था।

जबकि राम उस आवाज को सुनकर बुरी तरह चौंक उठा।

अगले ही पल वह मुस्कराता हुआ बोला—

मि॰ ब्लैकमैन, क्या तुम हमें अपना सलोना चेहरा नहीं दिखाओगे, जिसे देखने के लिये हमें अब तक न जाने कितने पापड़ बेलने पड़े हैं।

वह तो तुम लोग मरने के बाद भी नहीं देख पाओगे। हा... हा...हा...!

फिर राम की बात सुनकर बॉस आश्चर्य से चीखता हुआ कुर्सी समेत जैसे ही उनकी ओर घूमा, उसका चेहरा देखकर रहीम के कंठ से भी आश्चर्यमिश्रित चीख निकल गई।

शीघ्र ही रतनलाल ने अपने आपको संभाला।
निःसंदेह तुम बहुत चालाक हो लड़के, लेकिन अफसोस कि तुम्हें खुश होने का ज्यादा अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि तुम्हारे चीफ की लाश कुछ समय बाद वहां पड़ी होगी, जहां उसने तुम दोनों से मिलना था और तुम दोनों की लाश यहां...

...मैं समझता हूं कि अब तुम यह भी जरूर जानना चाहोगे कि आखिर मुझे तुम्हारी और मि॰ मुखर्जी के बीच होनेवाली बात-चीत का पता कैसे चल जाता था?
जरूर जानना चाहेंगे शैतान!

तो सुनो, अब तक जिस फ्रिकवेन्सी पर ट्रांसमीटर द्वारा तुम अपने चीफ से बात-चीत करते रहे थे अथवा रिपोर्ट देते रहे थे, उसी फ्रिकवेन्सी पर मैं अपने ट्रांसमीटर पर तुम्हारी सारी बातचीत कैच कर लेता था...

...जिससे मुझे न केवल तुम्हारे जिन्दा रहने के बारे में पता चल जाता था, बल्कि तुम्हारे प्रोग्रामों के बारे में भी पता चल जाता था। यही कारण है कि इस समय तुम अपने चीफ मुखर्जी के पास होने के बजाए मेरी कैद में हो...

...और हां, ट्रांसमीटर की तरह मैं तुम्हारे चीफ का फोन भी कैच करता था। हा...हा...हा...!
ओह!

चलो छोकरो, अब भगवान् को याद करो, ताकि मरने के बाद तुम्हें सीधे स्वर्ग पहुंचने में कोई कठिनाई न हो।
पेड्रो, शूट कर दो इन्हें!
ठहरो रतनलाल...

...क्या तुम हमें मारने से पहले यह नहीं बताओगे कि उस रात जिस रतनलाल की तुम्हारे ही साथी ने तुम्हारी ही कोठी पर हत्या की थी, वह व्यक्ति कौन था?
वह मेरा हमशक्ल साथी था, लेकिन चूंकि वह बेईमान हो चुका था और मेरे साथ गद्दारी पर उतर आया था, इसलिए मैंने एक तीर से दो शिकार किये। उसे मरवा भी डाला...

...और पुलिस के साथ-साथ तुम दोनों भी यह धोखा खा बैठे कि अपराधियों ने अपने तक न पहुंचने देने के लिये ही मेरी हत्या की होगी।

वास्तव में तुम्हारे दिमाग का जवाब नहीं। यदि इस समय भी मैं तुम्हारी आवाज न पहचान लेता तो शायद मैं सपने में भी यह नहीं सोच पाता कि तुम जिन्दा हो...
...अच्छा, बस एक हसरत और पूरी कर दो और यह बताओ कि मौत का धंधा तुम क्यों और किसलिए कर रहे हो? रुपया तो तुम दूसरे तरीके से भी पैदा कर सकते हो!

ठीक है, मरने से पहले तुम्हारी कोई हसरत बाकी न रह जाये, इसलिए बताए देता हूं। सुनो...
...इस काम के लिये मुझे एक देश मुंह मांगी दौलत दे रहा है और वह इस तरीके से मेरे द्वारा तुम्हारे देश में अशांति फैलाना चाहता है, ताकि तुम्हारा देश कभी तरक्की न कर सके।

यानी कि तुम उस देश के एजेण्ट हो!
बिल्कुल! उस देश की दौलत पर मैं शान से जिन्दगी जी रहा हूं, वरना तुम्हारे इस भूखे देश में तो मैं अब तक किसी नाली के कीड़े की तरह तड़प-तड़पकर दम तोड़ चुका होता।

रतनलाल की बात सुनकर रहीम एकाएक क्रोध से पागल हो उठा —
नीच, कुत्ते, गद्दार- मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। मेरे देश के लिये ऐसे लफ्ज कहता है।
उफ!

लेकिन रहीम का घूंसा खाकर रतनलाल फर्श पर गिरने के साथ ही चीख उठा—
खत्म कर दो पहले इसी सांप की औलाद को।
ओह, न...हीं...रहीम बचो!

परन्तु इससे पहले कि बदमाश रहीम का निशाना ले पाते, दरवाजे से गोलियों की जबरदस्त बौछार आई...
तड़-तड़-तड़
धांय-धांय-
उफ!
आह!
...और वे सभी चीखते हुए फर्श पर उलटते चले गये।

राम-रहीम ने चौंककर दरवाजे की ओर देखा तो द्वार पर सिपाहियों के साथ चीफ मुखर्जी और कमिश्नर जैड को देखकर उनके चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।
चीफ अंकल!
अरे बाप रे, पुलिस यहां तक कैसे आ पहुंची!
???

सिपाहियो, पकड़ लो इन सब शैतानों को।

लेकिन तभी रतनलाल ने गजब की फुर्ती के साथ जेब से रिवाल्वर निकाल लिया और—
हरामजादो, खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो, मुकाबला करो!
उफ!

पुलिस और बदमाशों ने तुरन्त इधर-उधर छिपकर मोर्चा लिया और एक-दूसरे पर भयानक गोलाबारी करने लगे।
रहीम, तुम रेंगते हुए रतनलाल की ओर बढ़ो। मुझे लगता है वह भागने की फिराक में है।
ठीक है!

मौका अच्छा है, भाग निकलूं!

जब राम ने रतनलाल को वहां से भागते देखा—

खों-खों-रहीम, रतनलाल भागने की कोशिश कर रहा है। तुम मेरे पीछे आओ— खों-खों-!

ठीक है, खों-खों-!

किसी तरह अपने आपको सम्भालते हुए दोनों तुरन्त रतनलाल के पीछे दौड़ पड़े।

उस हॉल से बाहर निकलते ही राम-रहीम की हालत में कुछ सुधार हुआ।

अब तुम बचकर नहीं जा सकते रतनलाल, तुम्हारी भलाई इसी में है कि अपने आपको कानून के हवाले कर दो।

राम-रहीम को बचते देख रतनलाल ऊपर जाने वाली सीढ़ियां फलांगने लगा। यह देख राम ने भी उस पर बेतहाशा फायरिंग करनी आरम्भ कर दी।

मैं कहता हूं रुक जाओ रतनलाल, वरना कुत्ते की मौत मारे जाओगे!

लेकिन रतनलाल बिना रुके ही ऊपर चढ़ता चला गया, चूंकि सीढ़ियां घुमावदार थीं, इसलिये उसे कोई नुकसान नहीं पहुंच रहा था।
मैं कहता हूं तुम मेरे पीछे मत आओ, वरना तुम्हारा भगवान् भी तुम्हें नहीं बचा पायेगा।
धांय धांय
धांय धांय

और शीघ्र ही रतनलाल फायरिंग करने के साथ-साथ सीढ़ियां फलांगता हुआ इमारत की ऊंची छत पर जा पहुंचा, जहां एक हेलिकॉप्टर खड़ा था।
बस एक बार हेलिकॉप्टर के भीतर पहुंच जाऊं। फिर कोई मेरा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा।

अगले ही पल रतनलाल न केवल सकुशल हेलिकॉप्टर के भीतर पहुंचने में सफल हो गया, बल्कि पॉयलट सीट पर पहुंचते ही उसने इंजन भी स्टार्ट कर दिया।
खड़ खड़
हा...हा...हा... अब कोई मुझे छू भी नहीं पायेगा!

जब राम-रहीम छत पर पहुंचे।
भइया, वह भाग रहा है। जल्दी गोली चलाओ।

राम ने तुरन्त हेलिकॉप्टर पर निशाना साधा, लेकिन—
पिट्-पिट्-
उफ! इस कम्बख्त रिवाल्वर को भी इसी समय धोखा देना था!

झुंझलाकर राम ने खाली रिवाल्वर ही हेलिकॉप्टर पर खींच मारा।
खटाक्

परन्तु हेलिकॉप्टर पर उसका क्या प्रभाव पड़ता।
वह तो हाथ से निकला जा रहा है भइया, अब क्या करें?
???

तभी चीफ मुखर्जी और पुलिस कमिश्नर भी कुछ सिपाहियों के साथ वहां आ पहुंचे।
ओह! वह शैतान तो निकल भागा। अब तो वह गोलियों की रेंज से भी बाहर हो चुका है।
उफ! सारे किये-कराए पर पानी फिर गया!

तभी राम को अपने जूते के तले में रखे अपने उस विशेष एटामिक रिवाल्वर का ध्यान आया, जिसकी किरणें काफी दूर तक मार कर सकती थीं। अगले ही पल उसने गजब की फुर्ती के साथ उसे जूते के तलवे से निकाल लिया।
अब वह गद्दार इतनी आसानी से बचकर नहीं जा पायेगा। मैं उसकी चिता उसके ही हेलिकॉप्टर में बनाऊंगा!
ओह, वेरी गुड!

जब हेलिकॉप्टर और रतनलाल के टुकड़े हवा में विलीन हो गये —

वह नराधम तो गया अपने धाम, मेरे विचार से हमें इस इमारत की तलाशी का काम भी पूरा कर लेना चाहिये।

ठीक कहते हो बेटा, आइये कमिश्नर साहब! यह काम भी शीघ्र से शीघ्र निपटा लें।

अवश्य! चलिये!

तलाशी के दौरान शीघ्र ही एक अन्डर ग्राउंड तहखाने में नोट छापने की बड़ी-बड़ी मशीनें, ब्लॉक्स व सादे कागजों के साथ-साथ छपी हुई लाखों की करेन्सी भी उन्हें प्राप्त हो गई।

ओ माई गॉड, मैं तो इतने बड़े प्रेस के यहां होने की सपने में भी उम्मीद नहीं कर सकता था।

अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र एक बार फिर राम-रहीम की प्रशंसा से रंगे पड़े थे।

दैनिक कर्म

दैनिक योगी
मौत का निर्माता खुद मौत को प्राप्त हुआ

हिन्द केसरी
राम-रहीम का एक और महान कारनामा

आज की ताजा खबर, नकली दवा बनाने वाला सेठ रतनलाल राम-रहीम का शिकार बना!

जबकि अगले दिन राम-रहीम राजधानी लौटकर इस केस की सफलता के उपलक्ष पर चीफ मुखर्जी द्वारा दी गई शानदार दावत का आनन्द ले रहे थे।

चीफ अंकल, एक बार तो मैं इस बात से आप पर संदेह कर बैठा था कि कहीं अपराधियों को हर बार हमारी गतिविधियों का पता आपके द्वारा तो नहीं चलता?

हां चीफ अंकल, इस बात के लिये मैं भी शर्मिन्दा हूं।

इसमें तुम लोगों का कोई दोष नहीं मेरे बच्चो, यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो इन स्थितियों में मैं भी ऐसा ही सोचता।

मुद्रक : गोयल ऑफसैट वर्क्स, दूरभाष : 7211428